श्री हनुमान चालीसा

श्री गुरुचरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि – वरनउँ रघुवर विमल यश जो दायक फल चारि
बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौ पवनकुमार – बल बुधि विद्या देहु मोहि हरहु कलेश विकार

1. जय हनुमान ज्ञान गुण सागर
   जय कपीश तिंहुँ लोक उजागर
2. रामदूतअतुलित बलधामा
   अंजनिपुत्र पवनसुत नामा
3. महावीर विक्रम बजरंगी
   कुमति निवार सुमति के संगी
4. कंचन वरण विराज सुवेशा
   कानन कुंडल कुंचित केसा
5. हाथ ब्रज अरु ध्वजा विराजै
   काँधे मूँज जनेऊ साजै
6. शंकर सुवन केसरी नन्दन
   तेजप्रताप महाजगवन्दन
7. विद्यावान गुणी अति चातुर
   राम काज करिवे को आतुर
8. प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया
   राम लखन सीता मन बसिया
9. सूक्ष्म रूप धरि सियंहि दिखावा
   बिकट रूप धरि लंक जरावा
10. भीम रूप धरि असुर सँहारे
    रामचंद्र के काज सँवारे
11. लाये सजीवन लखन जियाये
    श्री रघुबीर हरषि उर लाये
12. रघुपति कीन्ही बहुत बड़ायी
    तुम मम प्रिय भरत सम भाई
13. सहस वदन तुम्हरो यस गावै
    अस कहि श्रीपति कंठ लगावै
14. सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा
    नारद शारद सहित अहीशा
15. यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते
    कबि कोविद कहि सके कहाँ ते
16. तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा
    राम मिलाय राजपद दीन्हा
17. तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना
    लंकेश्वर भए सब जग जाना
18. युग सहस्र योजन पर भानू
    लील्यो ताहि मधुर फल जानू
19. प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं
    जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं
20. दुर्गम काज जगत के जेते
    सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते
21. राम दुवारे तुम रखवारे
    होत न आज्ञा बिनु पैसारे
22. सब सुख लहै तुम्हारी शरना
    तुम रक्षक काहू को डरना
23. आपन तेज सम्हारो आपै
    तीनों लोक हाँक ते काँपै
24. भूत पिशाच निकट नहीं आवै
    महाबीर जब नाम सुनावे
25. नासै रोग हरे सब पीरा
    जपत निरंतर हनुमत वीरा
26. संकट ते हनुमान छुड़ावै
    मन क्रम बचन ध्यान जो लावै
27. सब पर राम तपस्वी राजा
    तिन के काज सकल तुम साजा
28. और मनोरथ जो कोई लावै
    सोई अमित जीवन फल पावै
29. चारों युग परताप तुम्हारा
    है परसिद्ध जगत उजियारा
30. साधु संत के तुम रखवारे
    असुर निकंदन राम दुलारे
31. अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता
    असबर दीन्ह जानकी माता
32. राम रसायन तुम्हरे पासा
    सदा रहो रघुपति के दासा
33. तुम्हरे भजन राम को पावै
    जन्म जन्म के दुःख बिसरावै
34. अंतकाल रघुवर पुर जाई
    जहा जन्म हरिभक्त कहाई
35. और देवता चित्त न धरई
    हनुमत सेइ सर्वसुख करई
36. संकट कटै मिटै सब पीरा
    जौ सुमिरै हनुमत बलबीरा
37. जै जै जै हनुमान गोसाई
    कृपा करो गुरुदेव की नाई
38. यह शतवार पाठ कर जोई
    छूटहि बंदि महासुख होई
39. जो यह पढै हनुमान चालीसा
    होय सिद्धि साखी गौरीसा
40. तुलसीदास सदा हरिचेरा
    कीजै नाथ हृदय महँ डेरा

दोहाः पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप – राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप